अग्निमंथ

(Premna integrifolia Linn. Syn. P. obtusifolia)

कुल	: Verbenaceae/Lamiaceae
आयुर्वेदिक नाम	: अग्निमंथ
यूनानी नाम	: अरनी
संस्कृत नाम	: अग्निमंथ, श्रीपर्ण, वातघ्नि
हिन्दी नाम	: अगिया, अरघी
अंग्रेजी नाम	: Headache tree
व्यापारिक नाम	: अग्निमंथ
उपयोगी भाग	: जड़, छाल (जड़ व तने की), पत्तियाँ, फूल, काष्ठ

रासायनिक संरचना

अग्निमंथ के विभिन्न पादपांगो में कई प्रकार के अल्केलॉयड्स, कार्बोहाइड्रेट्स, अमीनो एसिड्स, स्टेरॉयड्स, फ्लेवोनॉयड्स, ग्लायकोसायड्स, टैनिन्स तथा फीनोलिक यौगिक पाये जाते है। इसकी जड़ की काष्ठ में एसीटोसाइड नामक ग्लूकोसाइड व्युत्पन्न (derivative) पाया जाता है। अग्निमंथ पौधे में पाये जाने वाले पादप रसायनों में linalool linoleic acid, p-methoxy cinnamic acid aphelandrine, caryophellen, clerodendrin – A, genikarine, iridoid glycoside, luteolin, pentacyclic terpenebetulin, premnaspirodiene, premnazole, premnezol, premneol, premnine geniarine, β-sitosterol प्रमुख है।

औषधीय गुण

अग्निमंथ के विभिन्न पादपांगों – जड़, पत्तियाँ, छाल, काष्ठ, पुष्प में अनेक औषधीय गुण पाये जाते है। इसकी पत्तियों में दर्दनाशक, जीवाणुरोधी, कैंसररोधी, अर्बुदरोधी, दमनकारी, कोशिका विषी, रोगाणुरोधी तथा स्तनपान कराने वाली माताओं में दुग्ध की मात्रा बढ़ाने के गुण पाये जाते है। इसकी जड़ें, कड़वी, कटु, तापवर्धक, विरेचक, विषनाशक, स्तम्भक, हृदय शक्तिवर्धक, वातानुलोमक, पाचक, क्षुधावर्धक, बलकारक तथा एन्टीऑक्सीडेन्ट होती हैं।

इसकी छाल मे मलेरियारोधी तथा सूजनरोधी गुण पाये जाते है। इसकी काष्ठ गठियारोधी होती है। इनके अलावा इस पौधे में मोटापा कम करने, कोलस्टरोल कम करने, परजीवीरोधी, व्रणरोधी, जठरांत्ररक्षक, हृदय उत्तेजक, हृदयरक्षक, शामक, यकृतरक्षक, रक्त शर्करा कम करने वाले, प्रतिरक्षा तंत्र अनुलोमक, आयुवर्धक, मस्तिष्करक्षक, ज्वरनाशक, कब्जनाशक तथा मूत्रवर्धक गुण भी पाये जाते हैं।

उपयोग

अग्निमंथ के विभिन्न पादपांगो का उपयोग आयुर्वेद, सिद्धा तथा यूनानी चिकित्सा प्रणालियों मे अनेक रोगों के उपचार तथा औषधि निर्माण में किया जाता है। आयुर्वेद में यह 'दशमूल' का एक अवयव है एवं वृहद् पंचमूलों में से एक है। औषधीय गुणों की दृष्टि से इसकी जड़ (मूल) सर्वाधिक महत्वपूर्ण अंग है तथा इसका उपयोग दशमूल क्वाथ, दशमूलारिष्ट तथा च्यवनप्राश अवलेह बनाने मे होता है। अग्निमंथ का उपयोग विभिन्न प्रकार के अरिष्ट, अवलेह, क्वाथ, घृत, तथा तेल बनाने में किया जाता है। अग्निमंथ का उपयोग विभिन्न फुफ्फुस, हृदय, रक्त, त्वचा तथा गुर्दे के रोगो की औषधियों को बनाने में भी किया जाता है। इसकी जड़ों का उपयोग रक्ताल्पता, ज्वर, सूजन, नसो के दर्द, खाँसी, दमा, ब्रोन्काइटिस, कुष्ठ रोग, त्वचा रोगों, अपच, मधुमेह, क्षुधामान्द्य, यकृत रोगों, दुर्बलता तथा मस्तिष्क रोगों के उपचार में किया जाता है। इसकी पत्तियों का उपयोग जुकाम, सर्दी, बुखार, योनि में जलन, बवासीर तथा ट्यूमर के उपचार में किया जाता है। इसके तने की छाल की राख का उपयोग जलोदर के उपचार में किया जाता है। इसकी काष्ठ का उपयोग जोड़ों की सूजन व दर्द के उपचार मे होता है। इसके फूलों का उपयोग गठिया, नसो के दर्द, सर्दी तथा बुखार के उपचार में होता है। इसके पंचांग का काढ़ा पीने से गठिया तथा नसों के दर्द में राहत मिलती है। अग्निमंथ का उपयोग यकृत विकारो, जीर्ण ज्वर, उदरशूल, पेट फूलना, पित्ती, खसरा, चेचक, श्वास में कठिनाई, लालबुखार, मूत्रशर्करा गुर्दों में lymphatic रिसपके जाना (chyluria), लसीका पर्वशोथ (lymphadenitis), त्वचा पर बैक्टीरिया संक्रमण (erysipelas), सिरदर्द तथा मलेरिया के उपचार मे भी किया जाता है। इसकी पत्तियों को पका कर तथा पके फलों व बीजों को खाया भी जाता है। इसकी पत्तियों को पानी मे उबाल कर उस पानी से नवजात शिशुओं को स्नान कराया जाता है। पत्तियों तथा जड़ों को नारियल तेल को सुगंधित बनाने में उपयोग किया जाता है। इसकी जड़ो से एक रंजक (कलम) भी प्राप्त होता है। इसकी लकड़ी का उपयोग उपकरणों, चाकू के दस्ते, चम्पू इत्यादि बनाने में होता है।

वितरण

अग्निमंथ भारतीय उप महाद्वीप, दक्षिण–पूर्व एशिया, ऑस्ट्रेलिया एवं दक्षिणी प्रशान्त महासागर के द्वीपों, पूर्वी अफ्रीका तथा दक्षिणी चीन में पाया जाता है। भारत में यह महाराष्ट्र तथा गुजरात के तटीय क्षेत्रो, उत्तरी कर्नाटक, असम, मेघालय की खासी पहाड़ियों, उत्तरी बंगाल, ओडिशा में महानदी के डेल्टा क्षेत्र, छत्तीसगढ़ तथा झारखण्ड राज्यों मे पाया जाता है।

आकारिकी

अग्निमंथ एक सीधा, आरोही क्षुप अथवा छोटा बहु–शाखीय वृक्ष है। इसकी ऊँचाई 7–10 मी. तक एवं तने का व्यास 30 से.मी. तक होता है। इसके तने पर काँटे होते है। छाल भूरे–धूसर रंग की, दरार युक्त तथा परतदार होती है। इसमें शाखायें लम्बी, काष्ठीय तथा नीचे झुकी हुई होती है। इसके कारण छत्र काफी नीचा होता है। इसकी पत्तियाँ सरल (simple), विपरीत क्रम में (opposite), पतली, दीर्घवृत्तीय, लम्बाकार होती है। पत्तियाँ 2.5 से 9.0 से.मी. लम्बी एवं 2.0 से 7.2 से.मी. चौड़ी हो सकती है। पत्तियाँ किनारे पर नुकीली होती है।

इनकी ऊपरी सतह चिकनी परन्तु निचली सतह थोड़ी रोयेंदार होती है। अग्निमंथ में अप्रेल से जून के मध्य पुष्पन होता है। फूल छोटे, द्विलिंगी, हरिताभ श्वेत रंग के होते हैं। ये पुष्प बड़ी संख्या में तितलियों तथा मधुमक्खियों को आकर्षित करते हैं। इस पौधे में फलन अगस्त–सितम्बर माह में होता है। फल गोल, बैंगनी–काले रंग के, चार खण्ड वाले होते है। बीज लम्बाकार होते है। इसकी जड़े पीले–भूरे रंग की, काष्ठीय, शाखीय, बेलनाकार तथा थोड़ी सुगंधित होती हैं। जड़ों के ऊपर के छिलके आसानी से निकल जाते हैं। जड़ों की सतह

चिकनी न हो कर झुर्रीदार होती है। इसकी लकड़ी हल्के भूरे रंग की, कठोर, टिकाऊ तथा सुगंधित होती है।

जलवायु तथा मृदा

अग्निमंथ के लिए उष्ण तथा आर्द्र जलवायु एवं आर्गेनिक मैटर युक्त रेतीली दोमट मिट्टी उपयुक्त है।

कृषि तकनीक

प्रवर्धन सामग्री

प्रवर्धन सामग्री के रूप में कम से कम एक वर्ष पुरानी स्टेम कटिंग्स प्रयोग की जाती है। ये कटिंग्स परिपक्व वृक्षों से फरवरी–मार्च में प्राप्त की जाती है।

नर्सरी तकनीक

कटिंग्स लगाने के लिए थैलियों में रेत, मिट्टी तथा गोबर खाद का मिश्रण भरा जाता है। कटिंग्स को किसी रूट हार्मोन से उपचारित कर इन थैलियों में लगाते है। शेड हाउस अथवा मिस्ट चैम्बर में रूटिंग अच्छी होती है। जड़ निकालने के पश्चात इन कटिंग्स का खेत में प्रत्यारोपण किया जा सकता है।

क्षेत्र तैयारी

खेत की अच्छी तरह जुताई कर तत्पश्चात पाटा चला कर मिट्टी को भुरभुरी तथा खरपतवार मुक्त कर लेना चाहिए। तत्पश्चात 2 मी. X 2 मी. अंतराल पर 45 से.मी. X 45 से.मी. X 45 से.मी. आकार के गड्ढे खोद कर उनमें सतही मिट्टी, रेत तथा गोबर खाद का मिश्रण भरा जाता है।

प्रत्यारोपण

मानसून के ठीक पहले जड़ युक्त कटिंग्स को तैयार गड्ढों में प्रत्यारोपित करना चाहिए।

रखरखाव

आवश्यकतानुसार समय–समय पर हाथ से निंदाई–गुड़ाई करना चाहिए। रोपण के बाद प्रथम 6 माह में तीन बार निंदाई की जाती है। वर्षाकाल में प्रति पौधा 50 ग्राम NPK उर्वरक दिया जाना चाहिए। वर्षाकाल में सामान्यतया सिंचाई की आवश्यकता नहीं है परन्तु शुष्क मौसम में 15 से 30 दिन के अन्तराल पर सिंचाई आवश्यक है।

रोग एवं कीट

अग्निमंथ पर किसी रोग अथवा कीट का प्रकोप नहीं देखा गया है।

अन्तवर्ती फसलें

वैसे तो अग्निमंथ को एकाकी फसल के रूप में उगाया जाता है परन्तु इनके पौधों के बीच के स्थान पर प्याज, लहसुन की फसल भी बोयी जा सकती है।

फसल परिपक्वता

फसल परिपक्व होने में कम से कम तीन वर्ष का समय लगता है।

विदोहन

फसल परिपक्व होने के पश्चात् सितम्बर–अक्टूबर माह में विदोहन किया जाता है। विदोहन में अग्निमंथ के पौधों को सावधानी पूर्वक जड़ सहित खोद कर निकाला जाता है।

विदोहनोत्तर प्रबंधन

पौधों को उखाड़ने के पश्चात् जड़ों को काट कर तथा तने व जड़ों को छीलकर छाल को अलग किया जाता है। तत्पश्चात् जड़ों व छाल को छोटे–छोटे टुकड़ों में काटा जाता है। फिर उन्हें छाया में सुखाया जाता है। सूखे हुए जड़ों तथा छाल के टुकड़ों को अलग–अलग साफ थैलियों / बोरों में भर कर शीत गृह में अथवा किसी ठंडे स्थान पर भंडारित किया जाता है।

उपज

तीन वर्ष पुराने रोपण से प्रति वृक्ष 500–800 ग्राम अथवा प्रति हेक्टेयर न्यूनतम 1250 कि. ग्रा. जड़े (शुष्क भार) प्राप्त हो जाती है।

ई–चरक ऐप

- जड़ी बूटियों, सुगंधित औषधियाँ, कच्चे माल एवं इनसे संबंधित जानकारी के लिये ई–चरक (ई–मंच) का उपयोग करें।
- यह ऐप एंड्रॉइड मोबाइल, प्ले–स्टोर एवं वेब पर भी उपलब्ध है।

औषधीय पौधों की कृषि तकनीक, प्राथमिक प्रसंस्करण एवं विपणन संबंधी अधिक जानकारी के लिये संपर्क करें।

क्षेत्रीय संचालक

क्षेत्रीय-सह-सुविधा केन्द्र (मध्यक्षेत्र)

राज्य वन अनुसंधान संस्थान, पोलीपाथर, जबलपुर–482008 (म.प्र.)

संपर्क : 0761-2665540, 9300481678, 9724658622, फैक्स : 0761-2661304

ई–मेल : rcfc_sfri817@rediffmail.com, sfri@rediffmail.com

वेब : http://www.rcfccentral.org

Amrit # 8349634330

अग्निमंथ

(*Premna integrifolia* Linn. Syn. *P. obtusifolia*)

क्षेत्रीय-सह-सुविधा केन्द्र, मध्य क्षेत्र

राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड

आयुर्वेद, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्धा और होम्योपैथी (आयुष) मंत्रालय, भारत सरकार

2020